प्रवक्ता शिक्षाशास्त्र

(श्रीमती तारा)

विक्रम सिंह कन्या महाविद्यालय

मुगलसराय — चन्दौली

बी.ए. तृतीय वर्ष

प्रथम प्रश्न पत्र

(बाल विकास)

बाल विकास

बाल विकास शब्द दो शब्दों का योग है बालक का अर्थ ऐसे व्यक्ति से समझा जाता है जिसकी आयु 12 वर्ष तक है किन्तु बाल विकास के अन्तर्गत बालक का अर्थ गर्भाधान से युवावस्था तक की आयु समझा जाता है।

विकास एक प्रक्रिया है जिसका प्रारम्भ गर्भाधान से होता है एवं जीवनपर्यन्त किसी न किसी रूप में चलता रहता है।

अतः बाल विकास के अन्तर्गत व्यक्ति के गर्भाधान से लेकर प्रौढ़ावस्था तक होने वाले क्रमिक शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है।

हरलॉक — बाल विकास का क्षेत्र मनोवैज्ञानिक शोधों की वह शाखा है जो युवक का गर्भाधान से मुक्त होने तक वह ऐसे व्यक्ति का जो कि लौकिक दृष्टि से परिपक्व होता है किन्तु उसे प्रौढ़ावस्था से सम्बन्धित अधिकारो सुविधाओं, उत्तरदायित्व को रखने की दृष्टि से परिपक्व नही समझा जाता है का अध्ययन करता है।

बालविकास विषय की विशेषताये

- बाल विकास एक विधायक विज्ञान है

विधायक विज्ञान विज्ञान का वह प्रकार है जिसके अन्तर्गत तथ्यों का उसी रूप मे अध्ययन किया जाता है जिस रूप मे वे है तथा नियामक विज्ञान के अन्तर्गत यह निश्चित किया जाता है कि कोई विचार, वस्तु या कार्य कैसा होना चाहिए।

- बाल विकास गर्भावस्था से परिपक्वावस्था तक बालक का अध्ययन करता है -
- शारीरिक विकास का अध्ययन करता है.
- मानसिक विकास का अध्ययन करता है

महत्व -

Milton - Childhood shows the man. as morning shows the day.

- बालक के स्वभाव को समझने में.
- व्यक्तित्व के सर्वांगीण एवं सन्तुलित विकास के लिए
- निर्देशन के क्षेत्र में.
- शिक्षा के क्षेत्र में
- स्वास्थ्य विज्ञान एवं चिकित्सा के क्षेत्र में
- बाल अपराध को रोकने में
- न्याय के क्षेत्र में
- खेलकूद एवं मनोरंजन के क्षेत्र में

वृद्धि तथा विकास

विकास —

विकास का तात्पर्य गर्भावस्था से लेकर मृत्यु तक किसी निश्चित समय की ओर होने वाले उन निरन्तर परिवर्तनों से है जो व्यवस्थित तथा समानुगत से होते हैं।

हरलॉक — "विकास का तात्पर्य बढ़ने से नहीं है। इसका तात्पर्य व्यवस्थित तथा समानुगत परिवर्तन से है जो कि परिपक्वता के लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर होते हैं।"

ड्रेवर — "विकास प्राणी में प्रगतिशील परिवर्तन है जो किसी निश्चित लक्ष्य की ओर लगातार निर्देशित होता है।"

वृद्धि — 'वृद्धि मात्रात्मक परिवर्तनों, आकार एवं संरचना में परिवर्तन का उल्लेख करती है।"

आकार में बढ़ना / तथा संरचनात्मक बढ़ना।

विकास के निर्धारक तत्व

- **परिपक्वता** —

परिपक्वता एक जीव-शास्त्रीय शब्द है। परिपक्वता विकास की वह प्रक्रिया है जिसमे समय के अनुसार व्यक्ति के शारीरिक अवयवों एवं मानसिक प्रक्रियाओं मे क्रमिक परिवर्तन होते हैं तथा शरीर विभिन्न क्रियाओं एवं क्षमताओं के लिये उपयुक्त बनता है।

- **सीखना** —

सीखना प्राणी की एक प्रक्रिया है जिससे वह वातावरण के सम्पर्क में आकर जो अनुभव एवं अभ्यास करता है ~~उसर~~ उससे उसके वंशानुक्रम व्यवहार मे परिवर्तन होता है।

विकास के सिद्धान्त

- विकास का एक निश्चित प्रतिरूप
- सामान्य से विशिष्ट की ओर
- विकास की गति निरन्तर है।
- प्रत्येक विकासात्मक की अपनी विशिष्टताएं
- प्रत्येक बालक का अपने विकास की चरम सीमा तक पहुँचना सम्भव है।

वृद्धि और विकास को प्रभावित करने वाले कारक

- बुद्धि एवं मानसिक योग्यता
- अंत: स्त्राव ग्रन्थियाँ
- लिंग भेद
- प्रजाति या वर्ण